✺ 6 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो, बाप को याद करो। यह भी नॉलेज है। एक है योग की नॉलेज, दूसरा है 84 जन्म के चक्र की नॉलेज। दो नॉलेज हैं। फिर उसमें दैवीगुण आटोमेटिकली मर्ज हैं।

2] यह भी बुद्धि में याद रहे कि हम ब्राह्मण सो देवता थे फिर 84 का चक्र लगाया। अब फिर देवता बनने के लिए आये हैं। जब देवताओं की डिनायस्टी पूरी हो जाती है तो भक्ति मार्ग में भी बहुत प्रेम से उनको याद करते हैं। अब वह बाप तुमको यह पद पाने के लिए युक्ति बताते हैं। याद भी बहुत सहज है। सिर्फ सोने का बर्तन चाहिए।

3] सारे ड्रामा में अभी यह है अन्तिम लाइफ। हो सकता है कोई शरीर भी छोड़ दे। और कोई पार्ट बजाना है तो जन्म भी ले सकते हैं। किसका बहुत हिसाब-किताब होगा तो जन्म भी ले सकते हैं। किसके बहुत पाप होंगे तो घडी-घडी एक जन्म ले फिर दूसरा, तीसरा जन्म लेते छोड़ते रहेंगे। गर्भ में गया, दु:ख भोगा, फिर शरीर छोड़ दूसरा लिया। काशी कलवट में भी यह हालत होती है। पाप सिर पर बहुत हैं। योगबल तो है नहीं। काशी कलवट खाना– यह है अपने शरीर का घात करना।

4] बाप कहते हैं खबरदारी से लेन-देन करना। कहाँ कोई खराब काम में लगाया तो सिर पर बोझा चढ़ जायेगा। दान-पुण्य भी बड़ा खबरदारी से करना होता है।

✺ योग-

1] याद से याद मिलती है, जो बच्चे प्यार से बाप को याद करते है उनकी कशिश बाप को भी होती है।

2] जितना बहुत याद करेंगे वह जैसे कि सामने खड़े है। कर्मातीत अवस्था भी ऐसी होनी है। जितना याद करेंगे कर्मेन्द्रियाँ चंचल नहीं होगी। कर्मेन्द्रियाँ चंचल बहुत होती हैं ना, इसको ही माया कहा जाता है। कर्मेन्द्रियाँ से कुछ भी खराब कर्म न हो। यहाँ योगबल से कर्मेन्द्रियाँ को वश करना है।

3] बाप कहते हैं, तुम जितना याद करेंगे उतना कर्मेन्द्रियाँ वश हो जायेंगी। इसको कहा जाता है **कर्मातीत अवस्था**। यह सिर्फ याद की यात्रा से ही होता है इसलिए भारत का प्राचीन **राजयोग** गाया हुआ है।

✺ धारणा-

1] जानते हैं हम मनुष्य से देवता बनते हैं तो दैवीगुण भी जरूर धारण करने हैं।

✺ सेवा-

1] वेदों-शास्त्रों में रचता और रचना की नॉलेज हो न सके। पहले तो बताओ वेदों से कौन-सा धर्म स्थापन हुआ? धर्म तो हैं ही 4, हरेक धर्म का धर्मशास्त्र एक ही होता है।